

डॉ. डेविड टर्नर, मैथ्यू

लेक्चर 7बी - मैथ्यू 16: यीशु, चर्च और क्रॉस-आकार का जीवन

नमस्कार, सभी को, मैं फिर से डेविड टर्नर हूँ। यह व्याख्यान 7बी है, मसीह, चर्च और मत्ती अध्याय 16 में शिष्यत्व का मार्ग। यह एक महान अध्याय है, और इसमें कई व्याख्यात्मक और धार्मिक मुद्दे आते हैं, साथ ही साथ व्याख्यात्मक प्रश्न भी।

इसलिए, जैसा कि आप अपनी पूरक सामग्री के पृष्ठ 32 पर देख सकते हैं, हमने अपने व्याख्यान को दो भागों में विभाजित करने का निर्णय लिया है। सबसे पहले, अध्याय की व्याख्या में कुछ व्याख्यात्मक विचार शामिल हैं। फिर, दूसरे भाग में, हम कुछ व्याख्यात्मक और धार्मिक प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो वास्तव में वहाँ बड़े मुद्दे हैं।

तो सबसे पहले हम मत्ती 16, 1-12 में फरीसियों और सद्दूकियों के खमीर को देखते हैं। यह अंश निश्चित रूप से शिष्यों को उनके सबसे अच्छे क्षणों में से एक में प्रस्तुत नहीं करता है। हालाँकि उन्होंने पुष्टि की है कि वे 13, 51 और 52 में राज्य के बारे में यीशु की दृष्टान्तिक शिक्षा को समझते हैं, यहाँ उनकी सोच निश्चित रूप से राज्य के मूल्यों को प्रकट नहीं करती है।

वे 15:13 और 14 में फरीसियों के अंधेपन के बारे में यीशु की हाल की चेतावनी को भूल जाते हैं, अध्याय 14 और 15 में 4,000 और 5,000 लोगों को खिलाने के लिए चमत्कारिक ढंग से भोजन उपलब्ध कराने की उनकी क्षमता के दो आश्चर्यजनक उदाहरणों का उल्लेख नहीं करते हैं। उनकी पहली स्मृति चूक उन्हें फरीसियों और सद्दूकियों द्वारा उत्पन्न खतरे के प्रति असंवेदनशील बनाती है, इसलिए वे खमीर के बारे में यीशु के रूपक को नहीं समझते हैं। चूँकि इस समय यीशु के राज्य और यहूदी नेताओं के बीच आध्यात्मिक संघर्ष उनकी सोच में बड़ा नहीं है, इसलिए वे मुख्य रूप से रोटी जैसे सांसारिक मामलों में व्यस्त हैं, और वे दूसरी चूक करते हैं।

चूँकि वे किसी तरह रोटी लाना भूल गए हैं, इसलिए वे यीशु के खमीर के रूपक को यहूदी नेताओं के साथ बढ़ते विवाद, 15:1 से 14, और उन नेताओं द्वारा यीशु के लिए उत्पन्न घातक खतरे के बजाय अपने स्वयं के खाली पेट से जोड़ते हैं। इस बारे में अध्याय 12, श्लोक 14 देखें। एक बार फिर, यीशु धैर्यपूर्वक लेकिन दृढ़ता से शिष्यों के कम विश्वास से निपटते हैं।

जब उसे एहसास होता है कि उन्होंने उसके खमीर के रूपक को गलत समझा है, तो वह उनकी याददाश्त को जगाकर उनकी समझ को बेहतर बनाता है। अगर उन्हें याद आता है कि कैसे उसने दो बार चमत्कारिक ढंग से हजारों लोगों को खाना खिलाया था, जबकि उसके पास पहले से ज़्यादा बचा हुआ खाना था, तो उन्हें एहसास होगा कि समस्या भोजन नहीं है। बल्कि, उन्हें राज्य के संदेश पर ध्यान देना चाहिए, जिसका लगातार और ज़्यादा तीव्र विरोध हो रहा है।

उन्हें यहूदी नेताओं की शिक्षाओं पर ध्यान देने की ज़रूरत है। अगर वे ऐसा करेंगे, तो भोजन की समस्या अपने आप हल हो जाएगी। शिष्यों की यह फटकार आज यीशु के शिष्यों के लिए

उपयुक्त है, जो सांसारिक और भौतिक चिंताओं में उलझे रहते हैं और शाश्वत राज्य के मूल्यों को भूल जाते हैं।

आज, जैसा कि तब था, शिष्यों को उनकी ज़रूरतों के लिए परमेश्वर के वफ़ादार, यहाँ तक कि चमत्कारी, प्रावधान की यादों को ताज़ा करने की ज़रूरत है। इस तरह की याद, राज्य के विरुद्ध छेड़े जा रहे आध्यात्मिक युद्ध के बारे में नई जागरूकता के साथ, 11:12, परमेश्वर के लोगों के मानसिक और आध्यात्मिक ध्यान को तेज़ करना चाहिए। और अब हम 16:13 से 20 में पतरस के मसीहाई स्वीकारोक्ति की ओर बढ़ते हैं।

यह निश्चित रूप से मैथ्यू के सुसमाचार में इसके क्राइस्टोलॉजी और चर्च के बारे में इसके दृष्टिकोण के लिए सबसे महत्वपूर्ण अंशों में से एक है। इसलिए हम इस बिंदु पर केवल एक व्याख्यात्मक तरीके से संक्षिप्त टिप्पणी कर सकते हैं, और जैसा कि आप अपनी रूपरेखा में देख सकते हैं, हम व्याख्यान के दूसरे भाग में इस खंड के साथ पृष्ठ 32 के निचले आधे हिस्से से निपटेंगे। लेकिन आपके लिए अंश को स्पष्ट करने के लिए, आप 16:13 में देखेंगे कि यीशु शिष्यों से अपना पहला प्रश्न पूछता है, जिसका उत्तर वे 16:14 में देते हैं।

फिर वह दूसरा प्रश्न पूछता है, 16:15, जिसका उत्तर वे 16:16 में देते हैं। इस अंश का मुख्य भाग 17 से 19 आयतों में यीशु द्वारा उस दूसरे प्रश्न का उत्तर है। यह वह अंश है जहाँ हमें पतरस के चर्च की चट्टान होने पर विवाद देखने को मिलता है।

और यह वह अंश है जहाँ राज्य की चाबियों के बारे में बताया गया है। और इस बारे में कई किताबें लिखी गई हैं, और बहुत स्याही बहाई गई है। मैं आपको इसके बारे में अपना संक्षिप्त संस्करण बाद में दूँगा।

इसलिए, यीशु कौन था, इस बारे में शिष्यों के लोकप्रिय दृष्टिकोण को जानने के बाद, सड़क पर लोगों की बात, पद 13 और 14 में, यीशु ने उनसे उनके विचार पूछे। और हम पद 15 से 19 में इसे पाते हैं। उनके विचार देने के बाद और इस बार वे सही हैं, जो हमेशा अच्छा होता है क्योंकि अध्याय 16 के पद 1 से 12 में, शिष्य अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में नहीं हैं, लेकिन परमेश्वर की कृपा से, वे पद 15 से 19 में सही हैं।

तो, हम इस बात से खुश हैं। लेकिन उसके बाद, यीशु ने उन्हें चेतावनी दी कि उन्हें किसी को यह नहीं बताना चाहिए कि वह मसीहा है। तो, हम एक बार फिर मसीहाई रहस्य की बात पर वापस आ गए हैं।

हमने इसे मैथ्यू में पहले भी देखा है। मुझे लगता है कि इसका कारण उस समय के लोगों की प्रवृत्ति थी कि वे एक ऐसे मसीहा को चाहते थे जो एक राजनीतिक, सामाजिक, क्रांतिकारी प्रकार का चरित्र हो जो रोमनों को उनकी पीठ से हटा दे और रातों-रात उनकी सभी समस्याओं का समाधान कर दे। यीशु उस तरह के व्यक्ति नहीं थे, और इस पर केंद्रीय अंश, निश्चित रूप से, मैथ्यू 12 में यशायाह 42 का उद्धरण है, जहाँ यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट किया गया है कि वह सड़क पर चिल्लाने वाले प्रकार के व्यक्ति नहीं थे ताकि उनके पीछे भीड़ इकट्ठा हो सके।

मुझे लगता है कि 16:20 में यही हो रहा है। यहूदी नेताओं के बढ़ते विरोध के साथ, यीशु यरूशलेम जाने से पहले दुश्मन को भड़काना या भीड़ को उत्तेजित नहीं करना चाहता। अब हम 16:21-28 में यीशु की अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी और शिष्यों को दी गई शिक्षा पर आगे बढ़ते हैं।

मैथ्यू 16:21 निस्संदेह मैथ्यू की कथा में एक महत्वपूर्ण पाठ है। मैथ्यू की संरचना के एक दृष्टिकोण में, 16:21 मैथ्यू के तीसरे प्रमुख खंड को इस वाक्यांश के साथ शुरू करता है। यह किंग्सबरी और डेविड बोवर के मोनोग्राफ का दृष्टिकोण है।

इस टिप्पणी में मैथ्यू की संरचना के उस तीन गुना दृष्टिकोण का पालन नहीं किया गया है, लेकिन फिर भी, मैथ्यू 16 मैथ्यू में पहली बार बना हुआ है जहाँ यीशु ने अपने शिष्यों को अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की स्पष्ट घोषणा की। दूसरे शब्दों में, यह मैथ्यू में पहली स्पष्ट जुनून भविष्यवाणी है। अध्याय 16-28 से मैथ्यू की बाकी कथा यहाँ संक्षेप में दी गई है।

पुस्तक के बाकी हिस्सों में होने वाली लगभग हर बात को 16:21 में थंबनेल स्केच के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह घोषणा तुरंत पतरस से एक मजबूत असहमति को उजागर करती है, जो 16:16 में अपने पिछले उत्तेजक कबूलनामे के बावजूद, 16:22 में और अधिक गलत नहीं हो सकता था। 16:23 में पतरस को उतनी ही दृढ़ता से फटकार लगाई जाती है जितनी दृढ़ता से उसे 16:17 में आशीर्वाद दिया जाता है, क्योंकि 16:16 में उसके शब्द परमेश्वर द्वारा उसे बताए गए थे, और 16:22 में उसके शब्द पूरी तरह से मानवीय थे, यदि शैतानी नहीं, तो मूल रूप से।

16:24 और उसके बाद, यीशु हमेशा आदर्श शिष्य रहे पतरस से मुड़कर शिष्यों को मुकुट से पहले क्रूस, महिमा से पहले पीड़ा, शासन से पहले सेवा के संदेश के साथ संबोधित करते हैं। पतरस ने एक ऐसी सोच को आवाज़ दी है जो स्पष्ट रूप से शिष्यों के बीच व्यापक थी, और उन सभी को उनकी मौलिक त्रुटि दिखाई जानी चाहिए। खैर, व्याख्यात्मक और धार्मिक मुद्दों पर आगे बढ़ने से पहले मत्ती 16 पर कुछ सारांश विचार।

मैथ्यू में पहले, फरीसी और अन्य यहूदी नेताओं के साथ टकराव तब होता है जब वे यीशु के वचन और कार्यों का जवाब देते हैं, जैसे कि 3:7, 9:3, 11:34, 12:2, 10: और 14:24-38। हालाँकि, जैसे-जैसे चीजें आगे बढ़ती हैं, शिष्य टकराव शुरू करने के लिए यीशु की तलाश शुरू करते हैं। क्या मैंने कहा कि शिष्य उसे खोजने लगे? मेरा मतलब था कि फरीसी टकराव शुरू करने के लिए यीशु की तलाश शुरू करते हैं।

15:1, 16:1, 19:3, 21:23, 22:23, और 22:34 जैसे अंशों को देखें। 16:1-4 में चिन्ह के लिए दूसरा अनुरोध, इसकी तुलना 12:38 से करें, यीशु द्वारा शिष्यों को उनकी शिक्षा से सावधान रहने की चेतावनी देना आवश्यक बनाता है, 16:5-12। यह इस सुसमाचार में शायद सबसे महत्वपूर्ण पेरिकोप की ओर ले जाता है, जहाँ यीशु पतरस से अपने मसीहा होने का प्रतिनिधि स्वीकारोक्ति प्राप्त करता है और अपने चर्च का निर्माण और उसे सशक्त बनाने का वादा करता है, 16:13-20 में।

इस महत्वपूर्ण मोड़ पर, यीशु पहली बार अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की स्पष्ट घोषणा करते हैं, और फिर वे अपने शिष्यों को आत्म-त्याग करने वाली जीवनशैली की ओर संकेत करते हैं, जिसका प्रतिफल उन्हें 16:21-30 में उनके पुनः आने पर मिलेगा। यह अध्याय फरीसियों के विरोध के विषय को रेखांकित करता है, लेकिन अब पहली बार यीशु शिष्यों को स्पष्ट रूप से बताते हैं कि विरोध उनकी मृत्यु का कारण बनेगा, 16:21। एक बार फिर, शिष्यों के कम विश्वास का सामना किया जाता है, जब यीशु उन्हें अपनी अनुपस्थिति में राज्य संदेश और मिशन को आगे बढ़ाने के लिए तैयार करते हैं, 16:8।

अपनी कमज़ोरियों के बावजूद, उन्हें पिता का रहस्योद्घाटन मिला है कि यीशु मसीहा हैं और वे मसीहाई समुदाय की नींव बनेंगे जिसे यीशु बनाएंगे, 16:16-18। उनका भविष्य यीशु के भविष्य से जुड़ा होगा। वे भी भविष्य के शानदार इनाम की ओर बढ़ते हुए क्रूस उठाएंगे, 16:24-28।

ठीक है, अब हम उन व्याख्यात्मक और धार्मिक मुद्दों पर आगे बढ़ते हैं जिन्हें हमने मत्ती 16 में चर्चा के लिए चुना है। सबसे पहले, हम इस महत्वपूर्ण अंश, 16:13-20 की व्याख्या से निपटना चाहते हैं। 16:13 और 14 में, यीशु गलील सागर से लगभग 25 मील उत्तर में जॉर्डन नदी के मुख्य जल पर कैसरिया फिलिप्पी की यात्रा करते हैं।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, यह स्पष्ट नहीं है कि जब उन्होंने यह यात्रा शुरू की थी, तब वे वास्तव में कहाँ थे। शिष्यों से यीशु का पहला प्रश्न उनकी पहचान के बारे में आम सहमति से संबंधित था। उनके द्वारा दिए गए उत्तरों से पहली सदी में मौजूद मसीहाई अटकलों के बारे में कुछ पता चलता है।

हेरोदेस एंटीपस ने पहले ही अंधविश्वास के आधार पर यीशु की पहचान जॉन बैपटिस्ट से कर दी थी, जो मृतकों में से जी उठा था। यह विचार कि यीशु एलियाह था, स्पष्ट रूप से मलाकी 4:5 पर आधारित था, जो प्रभु के अंतिम दिन से पहले एलियाह को भेजने की बात करता है। यह अनुमान कि यीशु यिर्मयाह या कोई अन्य भविष्यद्वक्ता था, समझाना कठिन है।

शायद यिर्मयाह के साथ यीशु का जुड़ाव यिर्मयाह के अपने समय के मंदिर के नेताओं के प्रति न्याय और विरोध के उपदेश के कारण है। इस बात का भी संकेत है कि व्यवस्थाविवरण 18:15-18 को यीशु के दिनों में कुछ यहूदियों द्वारा मसीहाई रूप में समझा गया था। कुल मिलाकर, यीशु के बारे में ये विचार सकारात्मक हैं, लेकिन वे अपर्याप्त साबित होते हैं।

भीड़ यीशु को ईश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में देख सकती है, लेकिन जैसा कि आगे की कहानी दुखद रूप से दिखाती है, उनकी समझ बेहद सतही और अस्थिर है। 16:15-17 में, यीशु का दूसरा प्रश्न शिष्यों की उनकी पहचान की समझ की जांच करता है। इसका मतलब है कि 16:16 में पतरस समूह के लिए उत्तर देता है, और 16:17-19 में यीशु समूह के प्रवक्ता के रूप में पतरस से बात करता है।

पतरस का उल्लेखनीय उत्तर यीशु के मसीहा होने को उसके दिव्य पुत्रत्व से जोड़ता है। मसीहा और परमेश्वर के पुत्र शब्दों के संबंध के लिए पुराने नियम की संभावित पृष्ठभूमि 2 शमूएल 7:14,

1 इतिहास 17:13, भजन 2:6-8, और पद 12, और भजन 89:27 और उसके बाद के पदों में पाई जाती है। जब पतरस इस तरह उत्तर देता है, तो यीशु उसे धन्य घोषित करते हैं।

कई यहूदियों के बीच भ्रम की स्थिति में यीशु की असली पहचान के बारे में पतरस की जागरूकता पतरस की ओर से किसी विशेष प्रतिभा के कारण नहीं है, बल्कि परमेश्वर के विशेष रहस्योद्घाटन के कारण है। यह विडंबना है कि पतरस यीशु को जीवित परमेश्वर के पुत्र के रूप में वर्णित करता है, क्योंकि बाद में यरूशलेम में, महायाजक जीवित परमेश्वर के नाम पर यह जानना चाहता है कि क्या यीशु मसीहा, परमेश्वर का पुत्र है। इस प्रकार महायाजक का प्रश्न पतरस के कबूलनामे के मुख्य विषयों को दोहराता है।

यदि पतरस का विश्वासपूर्ण स्वीकारोक्ति सुसमाचार का मसीही उच्च बिंदु है, तो महायाजक का क्रोधित प्रश्न निश्चित रूप से निम्न बिंदु है। जीवित परमेश्वर की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से इस्राएल के सच्चे परमेश्वर को राष्ट्रों के झूठे देवताओं से दूर करती है। अब 16:18-20 में, पतरस के जोरदार स्वीकारोक्ति के प्रति यीशु की प्रतिक्रिया कलीसिया में पतरस के आधारभूत अधिकार की घोषणा के साथ जारी रहती है, जिसे यीशु बनाएंगे।

सुसमाचारों में चर्च शब्द केवल दो बार आता है, यहाँ और मत्ती 18:18 में। हालाँकि कई प्रोटेस्टेंट अन्यथा सोचते हैं, ऐसा मुझे लगता है, और हम इस पर थोड़ी देर में और चर्चा करेंगे, यीशु पतरस के नाम का उपयोग करते हैं ताकि पतरस को शिष्यों के प्रवक्ता के रूप में, बढ़ते हुए चर्च की नींव के रूप में, उस चर्च के रूप में जो जन्म लेने वाला है। ठीक वैसे ही जैसे पौलुस इफिसियों 2:20 में प्रेरितों को चर्च की नींव के रूप में बताता है, और जॉन की नई यरूशलेम की तस्वीर में इस्राएल की बारह जनजातियों और शहर में बारह द्वारों को रखा गया है और बारह प्रेरितों को शहर की बारह नींव के रूप में रखा गया है, प्रकाशितवाक्य 21:14।

पीटर को चट्टान के रूप में लेना यीशु के शब्दों की अधिक स्वाभाविक समझ है, और यह उन प्रतिक्रियावादी विचारों से कहीं बेहतर है जो चट्टान को यीशु या यीशु के बारे में पीटर के कबूलनामे के रूप में लेते हैं। यीशु ने वादा किया कि प्रेरितों की नींव पर वह जो चर्च बनाएगा, उसे उसके खिलाफ खड़ी दुष्ट शक्तियों द्वारा नष्ट नहीं किया जाएगा। हेडिस के द्वार संभवतः शैतान और मृत्यु के क्षेत्र को संदर्भित करते हैं, जो यशायाह 38:10 में अधोलोक के द्वारों के समान है।

16:18-19 में चर्च और राज्य की चाबियों के बीच यीशु का संबंध यह दर्शाता है कि चर्च पृथ्वी पर राज्य के अधिकार की एजेंसी है। चाबियाँ अधिकार का प्रतीक लगती हैं, यशायाह 22:22 एक महत्वपूर्ण अंश है, और अधिकार मना करने और अनुमति देने, दूसरे शब्दों में, बांधने और खोलने से संबंधित है। जिस कार्य को मना किया जाता है उसे रब्बियों द्वारा बाध्य होने के रूप में वर्णित किया जाता है, जिस कार्य की अनुमति दी जाती है उसे मुक्त होने के रूप में वर्णित किया जाता है।

यह भाषा अत्यंत अनोखी और विवादास्पद है। इस बात पर बहस होती है कि क्या यह भाषा सुसमाचार प्रचार, व्याख्यात्मक या सैद्धांतिक घोषणाओं, यानी आधिकारिक शिक्षण या चर्च

अनुशासन को संदर्भित करती है। यह निर्धारित करना भी कठिन है कि क्या यीशु ने वादा किया है कि चर्च के निर्णयों की पुष्टि स्वर्ग में की जाएगी या स्वर्ग के निर्णय की पुष्टि चर्च द्वारा की जाएगी।

किसी भी हालत में, पतरस बाँधता है या मना करता है, और वह हारता है या अनुमति देता है, जैसा कि वह, अन्य शिष्यों के साथ, कुछ क्षण पहले किए गए अपने कबूलनामे को सच साबित करता है। इस उल्लेखनीय रहस्योद्घाटन के क्षण के बाद, यह आश्चर्यजनक है कि यीशु ने शिष्यों को उसे मसीहा के रूप में प्रकट करने से मना किया। यीशु स्पष्ट रूप से ऐसा भीड़ के उत्साह को कम करने के लिए करता है जो मसीहा को केवल एक राजनीतिक व्यक्ति के रूप में देखते थे।

यह यहूदी नेताओं द्वारा परमेश्वर की संप्रभुता के सिद्धांत के प्रति बढ़ते विरोध के कारण भी हो सकता है। अब, 16:18 में चट्टान के मुद्दे के साथ कुछ व्याख्यात्मक मुद्दे। सदियों से, मत्ती 16:18 के बारे में बहुत चर्चा हुई है।

पीटर के बारे में रोमन कैथोलिक शिक्षा के जवाब में कि वह पहला पोप था और पीटर से पोपों का एक प्रेरितिक उत्तराधिकार था, प्रोटेस्टेंट ने अक्सर तर्क दिया है कि यीशु का मतलब यह नहीं था कि पीटर चट्टान था। इसके बजाय, यह सुझाव दिया गया है कि यीशु खुद के बारे में बात कर रहे थे, लेन्की जैसे टिप्पणीकार, या वह पीटर के कबूलनामे, मैकनील की टिप्पणी, को चर्च की नींव के रूप में संदर्भित कर रहे थे। हाल ही में, गुंड्री की टिप्पणी का तर्क है कि 16:18 7:24 का संकेत देता है और यीशु का मतलब है कि वह अपने शब्दों पर चर्च का निर्माण करेगा।

लेकिन 7:24 16:18 से इतना दूर है कि ऐसा संकेत बहुत ही सूक्ष्म है। कभी-कभी यह तर्क दिया जाता है कि पीटर को ध्यान में नहीं रखा जा सकता क्योंकि पीटर के लिए ग्रीक शब्द पेट्रास पुल्लिंग है और चट्टान के लिए ग्रीक शब्द पेट्रा स्त्रीलिंग है। लेकिन यह एक रूपक है, और व्याकरणिक सहमति और सटीकता आवश्यक नहीं है।

यह भी तर्क दिया जाता है कि चूंकि पेट्रा का अर्थ आधारशिला है और पेट्रास का अर्थ व्यक्तिगत पत्थर है, इसलिए पीटर चर्च की नींव नहीं है। लेकिन फिर से, यह एक अति सूक्ष्म शाब्दिक भेद है, और यह किसी भी प्रकार के रूपक भाषण को असंभव बना देगा, जिसमें तुलना शामिल है। तुलना करने के लिए आपके पास पहचान होना जरूरी नहीं है।

आपको बस समानता की आवश्यकता है। मुझे लगता है कि यीशु 16:18 में पतरस के बारे में उतनी ही स्पष्टता से बात कर रहे हैं, जितनी स्पष्टता से पतरस 16:16 में यीशु के बारे में बात कर रहे थे। अब नींव का रूपक विभिन्न संदर्भों में यीशु की शिक्षा, 7:24, स्वयं यीशु, 1 कुरिन्थियों 3.10, और पश्चात्ताप, इब्रानियों 6.10 जैसी संस्थाओं को संदर्भित कर सकता है। रूपक जिस संस्था की ओर संकेत करता है, उसके बारे में निर्णय लेने में व्यक्तिगत संदर्भ निर्णायक होता है।

इस संदर्भ में, पतरस के कबूलनामे पर यीशु का जवाब एक व्यंग्य है। इसके लिए तकनीकी शब्द पैरानोमेसिया है। यह पतरस को दिए गए उपनाम, 4:18, और 10:2 पर एक व्यंग्य है। यह व्यंग्य पतरस की एक आदर्श शिष्य के रूप में अद्वितीय भूमिका से संबंधित है, जिसके शब्द और कार्य अक्सर मत्ती में शिष्यों को समग्र रूप से दर्शाते हैं।

प्रेरितों के काम 2 और 10 में यहूदियों और अन्यजातियों के लिए प्रचारक के रूप में पतरस की भावी भूमिका को भी यहाँ पेश किया गया है। यीशु यहाँ खुद को चर्च की नींव के रूप में नहीं बता रहे हैं, क्योंकि वे खुद को निर्माता के रूप में वर्णित करते हैं। न ही पतरस का प्रेरितिक अंगीकार चर्च की नींव है।

बल्कि, वह स्वीकारोक्ति करने वाले प्रेरित के रूप में वह नींव है। और यह केवल पतरस ही नहीं है जो नींव है, बल्कि बराबरी के बीच प्रथम के रूप में पतरस, अन्य शिष्यों, क्योंकि संदर्भ यह स्पष्ट करता है कि पतरस 16:16 में संपूर्ण प्रेरितों के लिए बोल रहा है। यह मथाई संदर्भ में सबसे अच्छा फिट बैठता है, और यह अन्य नए नियम के ग्रंथों के साथ भी सुसंगत है जो चर्च के लिए एक प्रेरितिक नींव की बात करते हैं, जैसे कि इफिसियन 2.20 और रहस्योद्घाटन 21.14। बैपटिस्ट टिप्पणीकार ब्रॉडस ने 1886 में इसे पहचाना, उनकी टिप्पणी देखें, और हाल ही में इंजील संबंधी टिप्पणियाँ इस दृष्टिकोण से सहमत हैं, ब्लोमबर्ग, कार्सन, फ्रांस, हैगनर।

पीटर के बारे में रोमन कैथोलिक शिक्षा के साथ प्रोटेस्टेंटों की असली मुश्किल यह है कि रोम के पहले बिशप के रूप में पीटर से एकमात्र प्रेरित उत्तराधिकार की धारणा निकलती है। यह धारणा स्पष्ट रूप से मैथ्यू के पाठ में कालभ्रमित राजनीतिक चिंताओं को शामिल करती है, जो पीटर के पहले पोप होने या अन्य ईसाई चर्चों पर रोम की प्रधानता के बारे में कुछ नहीं कहती है। निश्चित रूप से मैथ्यू चर्च में पीटर की अचूकता या एकमात्र अधिकार के विचार का समर्थन नहीं करता, क्योंकि मैथ्यू में अक्सर यह स्पष्ट होता है कि पीटर अन्य प्रेरितों के प्रतिनिधि के रूप में बोलता है और अक्सर गलतियाँ करता है।

15:15, 16:6, 17:4, 25, 18:21, 19:27, 26:33-35, और प्रेरितों के काम 11:1-18, और गलतियों 2:11-14 जैसे अंशों को देखें। पतरस के अपने शब्दों में, यीशु स्वयं चर्च का मुख्य चरवाहा था, यानी वरिष्ठ पादरी, पॉटिफ्रेक्स मैक्सिमस। 1 पतरस 5:4 को देखें। अब 16:19 में चाबियों और बाँधने और खोलने की बात। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, यीशु पतरस को चर्च की नींव और राज्य की चाबियों के धारक के रूप में बोलते हैं। नींव और प्रमुख रूपकों का संबंध यह स्पष्ट करता है कि कोई चर्च और राज्य को अलग नहीं कर सकता है, लेकिन पहला, चर्च, वह एजेंसी है जिसके द्वारा दूसरा, राज्य, पृथ्वी पर फैलाया जाता है।

पतरस और अन्य प्रेरितों की आधारभूत चर्च संबंधी भूमिका उनके द्वारा कुंजियों को संभालने के माध्यम से निभाई जाती है, जो कि उनके द्वारा राज्य के अधिकार का प्रयोग है। यशायाह 22:15 और 22, तथा प्रकाशितवाक्य 1:18, 3:7, 9:1-6, और 20:1-3 जैसे कुंजियों पर अन्य अंशों को देखें। यह अधिकार बांधने और खोलने के माध्यम से प्रयोग किया जाता है। बांधने और खोलने के बारे में विद्वानों की अलग-अलग व्याख्याएँ हैं।

कुछ लोग इस विचार पर जोर देते हैं कि कुंजियाँ चर्च में प्रवेश करने वाले लोगों पर अधिकार का एक रूपक हैं। इस प्रकार, प्रेरितों ने यीशु के अपने अंगीकार के माध्यम से नियंत्रित किया कि किसे प्रवेश की अनुमति है और किसे प्रवेश वर्जित है। अन्य लोग 16:19 की तुलना 18:18 से करते हैं और चर्च के भीतर अनुशासन को अधिकार के क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं जिसे बांधने और खोलने के रूप में वर्णित किया गया है।

रब्बीनिक यहूदी धर्म में, बंधन या बंधन मुक्त करने का मूल भाव अक्सर व्यक्तिगत आचरण के क्षेत्रों में बाइबिल के कानून की सावधानीपूर्वक व्याख्या के लिए लागू किया जाता था, जिसे हलाखा कहा जाता है। रब्बियों ने टोरा की व्याख्या करते समय आचरण में क्या अनुमति दी गई थी और क्या निषिद्ध था, इस पर आधिकारिक राय दी। यह तय करना आसान नहीं है कि उपरोक्त व्याख्याओं में से कौन सी सही है।

16:16 को 18:18 के अनुसार व्याख्या करना समस्याग्रस्त है क्योंकि मत्ती 18 का संदर्भ समुदाय के रखरखाव से संबंधित है, न कि उसमें प्रवेश से। इसके अलावा, 18:18 में बंधना और खोलना समुदाय का कार्य है। ध्यान दें कि यह वादा चर्च को दिया गया है, प्रेरितों को नहीं।

रब्बीनिक उपयोग के संदर्भ में बंधन और मुक्त करने की व्याख्या करने में समस्या यह है कि रब्बीनिक उपयोग कुछ सौ साल बाद का है, शायद कम से कम मैथ्यू से, और यह एक अलग धार्मिक संदर्भ में होता है। 16:16 से 19 में मैथ्यू की कल्पना चर्च के निर्माण और उन लोगों द्वारा इसमें प्रवेश करने से संबंधित है, जो पीटर और प्रेरितों के साथ, यीशु को मसीहा, ईश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार करते हैं। इसलिए, प्रेरित वास्तविक अर्थों में राज्य के द्वारपाल हैं, क्योंकि वे चर्च के संस्थापक नेता हैं, जिसकी एजेंसी पृथ्वी पर राज्य का विस्तार करती है।

उनकी भूमिका मत्ती 16:16 की सच्चाई की आधिकारिक घोषणा जारी रखना है और ऐसा करके वे उन लोगों को चर्च में प्रवेश करने की अनुमति देते हैं जो यीशु को स्वीकार करते हैं और इसके माध्यम से राज्य में प्रवेश करते हैं। जो लोग यीशु को स्वीकार करने से इनकार करते हैं, उन्हें दरवाज़ा बंद और बंद मिलता है। उन्हें प्रवेश वर्जित है।

हेगनर ने अपनी टिप्पणी में इस पर अच्छी चर्चा की है। अब हम मत्ती 16:24 और 25 पर चलते हैं जहाँ शिष्यों के लिए सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण सबक है। इन आयतों में पतरस का आश्चर्यजनक रूप से तेजी से गिरकर धन्य स्वीकारोक्ति से लेकर फटकारे गए विरोधी तक का पतन यीशु के हर शिष्य को जोर से बोलना चाहिए।

एक पल के लिए, पतरस की मानसिकता सकारात्मक रूप से शैतानी हो जाती है क्योंकि वह यीशु को पिता की इच्छा का पालन करने से रोकना चाहता है। अध्याय 4 में शैतान के प्रलोभन को याद करें, विशेष रूप से श्लोक 8 और 9? उसने यीशु को बिना क्रूस के राज्य का वादा किया था। ये सभी चीजें मैं तुम्हें दूंगा यदि तुम बस नीचे गिरकर मेरी आराधना करोगे। इसलिए, यीशु पतरस से जो अनुभव कर रहा था, हालांकि पतरस निश्चित रूप से ऐसा नहीं चाहता था, वह शैतान से उसके अनुभव के समान था।

पतरस ने स्पष्ट रूप से केवल यह सुना था कि यीशु को मार दिया जाएगा। यीशु के पुनरुत्थान के बारे में शब्द पतरस के मन में बिल्कुल भी नहीं आए, जाहिर है। और ऐसा ही आज के शिष्यों के साथ भी है जो अक्सर यह नहीं समझ पाते कि उनके वर्तमान कष्ट यीशु की वापसी पर आने वाली महिमा के साथ तुलना करने के योग्य नहीं हैं।

16:27, रोमियों 8:18 से तुलना करें। शिष्यों की आरामदायक जीवनशैली और दुख से बचने की इच्छा राज्य के लिए एक बाधा है जिसे केवल ईश्वरीय अनुग्रह से ही दूर किया जा सकता है। 19:23-26 को देखें। यहाँ तक कि जो लोग आत्म-प्रशंसा के लालच पर काबू पा चुके हैं और जिन्होंने यीशु का अनुसरण किया है, उन्हें भी राज्य के मूल्यों के लिए समय-समय पर पुनर्निर्देशन की आवश्यकता है, जैसा कि जेबेदी के बेटों और उनकी माँ ने किया था। 20:20-28। इस दुनिया के शासकों के मूल्य और मॉडल हमेशा राज्य में घुसपैठ करने की धमकी देते हैं, और यीशु के शिष्यों को लगातार उनकी सलाह पर विचार करने की ज़रूरत है कि आपके बीच यह अलग होगा।

20:25-26. 16:22 में पतरस की चूक के बाद यीशु ने अपने शिष्यों को यही पाठ पढ़ाया। आप देखिए, जब पतरस अध्याय की शुरुआत में यीशु को स्वीकार करता है, तो वह शिष्यों की ओर से बोलता है, और संभवतः पतरस इस दूसरे भाग में भी शिष्यों की ओर से बोलता है। इसलिए, जब वह सही होता है तो वह बराबर वालों में प्रथम होता है, और जब वह गलत होता है तो वह बराबर वालों में प्रथम होता है। लेकिन फिर यीशु सभी शिष्यों को सिखाता है।

ध्यान दें 16:24 यह स्पष्ट करता है कि यीशु पूरे समूह से बात कर रहे हैं, न कि केवल पतरस से। इसलिए, पतरस की चूक बाकी शिष्यों को भी सीखने का अवसर है। ऐसा नहीं है कि वफ़ादार शिष्यों को महिमा और इनाम नहीं मिलता।

यह यहाँ और 19:27-29 में स्पष्ट है। लेकिन वह महिमा और पुरस्कार केवल आत्म-त्याग सेवा के जीवन के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है, जो यीशु द्वारा क्रूस तक दिखाए गए चरणों का अनुसरण करता है। वास्तव में एक महत्वपूर्ण सबक। अब, अंत में, मत्ती 16 में हमें संक्षेप में चर्चा करने की आवश्यकता है कि जब यीशु ने अपने आगमन का उल्लेख किया तो वह किस बारे में बात कर रहा था।

16:27 में यीशु अपने शिष्यों से वादा करता है कि जब वह अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में लौटेगा, तो उनके आत्म-त्याग के जीवन को पुरस्कृत किया जाएगा। यह यीशु के पृथ्वी पर आने और अंतिम न्याय का स्पष्ट संदर्भ है। 13:40-41, 24:30-31, 25:31, 26:64। लेकिन 16:28 थोड़ा उलझन भरा है क्योंकि यह यह बताकर उस शानदार आगमन की निश्चितता पर जोर देता है कि यीशु के कुछ समकालीन लोग मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए देखने के लिए जीवित रहेंगे।

यीशु के सभी शिष्य बहुत पहले ही मर चुके थे। इसलिए, या तो यीशु और मैथ्यू गलत थे, जैसा कि बेयर जैसे उदार टिप्पणीकार आपको बताएंगे, या फिर यहाँ जिस तथाकथित आगमन की बात की गई है, वह अंतिम निर्णय की शुरुआत करने वाले आगमन से अलग कुछ है। इवेंजेलिकल विद्वान समझदारी से दूसरा विकल्प लेते हैं और सुझाव देते हैं कि यीशु या तो अपने रूपांतरण की बात कर रहे थे, ब्रोमबर्ग सुझाव देते हैं कि, उनके पुनरुत्थान की, पेंटेकोस्ट पर आत्मा को भेजने की, या 70 ईस्वी में यरूशलेम के न्याय की।

कुछ लोग 16.28 को मसीह की भविष्य की महिमा की एक सामान्य भविष्यवाणी के रूप में देखने का प्रयास करते हैं, जो पृथ्वी पर उनकी वापसी तक है, जिसमें पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, पित्तोकुस्त और वर्तमान स्वर्गीय सत्र शामिल हैं। कार्सन, फ्रांस, हेंड्रिक्सन और मॉरिस सभी इस दृष्टिकोण के लिए अच्छे तर्क देते हैं। हालाँकि इस अंतिम दृष्टिकोण में कुछ योग्यता है, लेकिन मुझे लगता है कि पहला दृष्टिकोण सबसे अधिक संभावना वाला है।

यीशु अपने रूपांतरण को एक शानदार आगमन के रूप में बता रहे हैं। 16.28 के प्रकाश में देखा जाए तो, रूपांतरण, जो 17:1 के अनुसार, केवल छह दिन बाद हुआ, यीशु के भविष्य के शानदार आगमन की पूर्वसूचना है। शायद कीनर, अपनी टिप्पणी में, यह कहने में सही हैं कि रूपांतरण भविष्यसूचक रूप से पूरे युगांतशास्त्रीय क्षेत्र का परिचय देता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि रूपांतरण एक शानदार अनुभव था, 17:2 और 5, लेकिन यह केवल अस्थायी था और केवल यीशु के भविष्य में पृथ्वी पर लौटने पर आने वाली स्थायीता के पूर्वावलोकन के रूप में काम कर सकता था। और उनमें से कुछ जिन्होंने यीशु को 16:28 में भविष्यवाणी करते हुए सुना, अर्थात् पीटर, जेम्स और जॉन, 17:1 के अनुसार, रूपांतरण के साक्षी बने। 2 पतरस 1:16-18 में पृथ्वी पर मसीह के शक्तिशाली भविष्य के आगमन की सच्चाई की पुष्टि करने वाली प्रत्याशा के रूप में रूपांतरण की अस्थायी महिमा में अपनी भागीदारी पर खुद को प्रतिबिंबित करता हुआ प्रतीत होता है, एक पिछला पाठ जो 10:23 के समान ही कठिनाइयाँ प्रस्तुत करता है। 10.23 पर टिप्पणी और उस पर हमारे शुरुआती व्याख्यान में, यह तर्क दिया गया है कि यह मार्ग बताता है कि चर्च का इज़राइल के लिए मिशन यीशु की पृथ्वी पर शानदार वापसी तक जारी रहेगा। खैर, आपके पास मैथ्यू 16 में कुछ मुद्दों पर एक मौका है, निश्चित रूप से एक बहुत ही महत्वपूर्ण, चुनौतीपूर्ण और आध्यात्मिक रूप से उत्थान करने वाला अध्याय।

यीशु मसीह हमारे और पतरस जैसे दोषपूर्ण लोगों के बावजूद अपनी कलीसिया का निर्माण करेंगे।